The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 1 (January 2025)

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n1.12

CONFERENCE RESEARCH ARTICLE

सामुदायिक कल्याण में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की भूमिका: एक दार्शनिक अन्वेषण

(The Role of Artificial Intelligence in Community Welfare: A Philosophical Exploration)

मनीषा मिश्रा
शोधार्थी
दर्शनशास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय , गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Abstract
Artificial Intelligence (AI) in the realm of community welfare is giving birth to possibilities and thoughtfulness in contemporary society. This technological revolution not only improves the quality of life but also contributes effectively to health, education, poverty alleviation, disaster management, and other social services. Through AI, better decision-making, efficient resource distribution, and rapid problem-solving are becoming feasible, thereby ensuring prosperity and justice in society. For example, AI-based predictive models are assisting in the management of unforeseen disasters and are paving the way for new diagnoses and treatments in the field of medicine. However, a pertinent question arises: how should its development and usage for human welfare be guided by ethical guidelines? Additionally, it is essential to understand how AI (Artificial Intelligence) can reduce social inequalities and influence the human decision-making process. Should it be viewed merely as a technical tool, or should it be integrated with principles such as ethical responsibilities, privacy, and equality? Adopting a human-centered perspective, this research paper analyzes not only the technical benefits of AI but also its ethical, social, and philosophical aspects. The aim of this research paper is to clarify how AI can be used as a collaborative tool to enhance community participation and self-reliance. By integrating technical innovations with philosophical perspectives, this paper presents a framework for achieving long-term goals of community welfare. Therefore, understanding these aspects of AI will not only expand its scope but also ensure that technological progress remains balanced with human values.

Keywords: Community welfare, Artificial intelligence (AI), Ethical intelligence, Environmental conservation, Social justice, Social inclusion, Existential concerns, Social harmony

Abstract
सामुदायिक कल्याण के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) समकालीन समाज में संभावनाओं और विचारशीलता को जन्म दे रहा है। यह तकनीकी क्रांति न केवल जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाती है, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, आपदा प्रबंधन और अन्य सामाजिक सेवाओं में भी प्रभावी योगदान दे रही है। एआई के माध्यम से बेहतर निर्णय, संसाधनों का प्रभावी वितरण और त्वरित समाधान संभव हो रहे हैं, जो समाज में समृद्धि और न्याय सुनिश्चित करने में मदद कर रहे हैं ।[1] उदाहरण के लिए, एआई आधारित पूर्वानुमान मॉडल अप्रत्याशित आपदाओं के नियंत्रण में सहायक सिद्ध हो रहे हैं और चिकित्सा के क्षेत्र में नए निदान और उपचार के मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। किन्तु यहां एक प्रश्न स्वाभाविक है कि मानव कल्याण के लिए इसके विकास और उपयोग को कौन से नैतिक दिशानिर्देशों द्वारा संचालित किया जाना चाहिए? इसके साथ ही, यह समझना आवश्यक है कि एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) सामाजिक असमानताओं को कैसे कम कर सकती है और मानव निर्णय प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करती है। क्या इसे केवल तकनीकी उपकरण माना जाए, या इसे नैतिक जिम्मेदारियों, गोपनीयता और समानता जैसे सिद्धांतों से जोड़ा जाना चाहिए? मानव-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए यह शोध पत्र एआई के तकनीकी लाभों के साथ-साथ इसके नैतिक, सामाजिक और दार्शनिक पहलुओं का विश्लेषण करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कैसे एआई को सामुदायिक सहभागिता और आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए एक सहयोगी उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह शोध पत्र मुख्यतः तकनीकी नवाचार और दार्शनिक दृष्टिकोणों को समन्वित व एकीकृत करके सामुदायिक कल्याण के दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। अतः एआई के इन पहलुओं को समझने से न केवल इसके दायरे का विस्तार होगा, बल्कि यह सुनिश्चित होगा कि तकनीकी प्रगति मानवीय मूल्यों के साथ संतुलन बनाए रखे।

Keywords: सामुदायिक कल्याण, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस(एआई), *प्राकृति बुद्धिमत्ता,* पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, सामाजिक समावेशन, अस्तित्वगत चिन्तायें, समजिक समरसता।

आधुनिक समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) एक प्रगतिशील तकनीकी क्षेत्र के रूप में तेजी से उभर रहा है जिसका व्यापक प्रभाव व्यापार, विज्ञान और शिक्षा पर पड़ रहा है, साथ ही यह समाज के प्रत्येक आयाम को वृहद रूप से प्रभावित भी कर रहा है। सामुदायिक कल्याण जिसमें समाज के सभी सदस्यों के अधिकारों, अवसरों और समग्र जीवन स्तर को गुणवत्तापूर्ण बनाने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है,में एआई की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। सामुदायिक कल्याण में एआई का दार्शनिक अन्वेषण इस बात को सुनिश्चित करता है कि एआई कैसे सामुदायिक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है, साथ ही इससे संबंधित नैतिक सामाजिक और अस्तित्वगत प्रश्नों पर भी विचार करता है । इस संदर्भ में सामुदायिक कल्याण को समझना आवश्यक हो जाता है कि सामुदायिक कल्याण का आशय क्या है?

सामुदायिक कल्याण एक सामाजिक अवधारणा है, जिसका लक्ष्य समुदाय के प्रत्येक सदस्य का जीवन स्तर सुदृढ़ करना और उनका हित सुनिश्चित करना जिसमें सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और शारीरिक कल्याण को बढ़ावा दिया जा सके है ताकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और संसाधन उपलब्ध हो सके इसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समावेशन के साथ साथ न्याय को प्राथमिकता दी जाती है | तब समाज का समग्र विकास और खुशहाली आवश्यक हो जाता है।[2] इसका उद्देश्य सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना है ताकि भेदभाव की स्थिति समाप्त हो और स्वास्थ्य व शिक्षा की उपलब्धता समुदाय के सभी सदस्यों तक हो, अवसर की समानता से आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके जिससे निर्धनता कम करने के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके और ही आर्थिक स्थिति को भी बढ़ावा मिले |

समाज में शांति और सहयोग की भावना बनी रहे इसके लिए सामुदायिक संबंधों की प्रगाढ़ता पर बल दिया जाना चाहिए ताकि आपसी सहयोग और समझ विकसित हो सभी नागरिकों को न्याय संगत अधिकार और सुरक्षा प्राप्त हो सके इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए तथा उन्हें सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना आवश्यक हैं।[3] इस प्रकार सामुदायिक कल्याण का उद्देश्य समाज में सुख -समृद्धि ,शांति और समरसता को बढ़ावा देना है जिससे प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार हो सके। सामुदायिक कल्याण के पश्चात् अब एआई को समझने की आवश्यकता है कि एआई क्या है और यह कैसे काम करता है?

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) वह क्षेत्र जिसमें कंप्यूटर और मशीनों को मनुष्यों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की जाती है यहाँ प्रगतिशील तकनीकी प्रणालियां काम करती हैं जो डाटा का विश्लेषण करती हैं इस प्रकार यह स्वचालित निर्णय प्रणाली पर आधारित होती है | एआई को काम करने के लिए डेटा की आवश्यकता होती है यह डेटा टेक्स्ट मैसेज, इमेज, वॉइस रिकॉर्डिंग और संख्यात्मक रूप में भी हो सकता है ,यह सिस्टम पर डाटा को इकट्ठा कर प्रोसेस करता है जिससे तथ्यों की महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की जा सके।[4] यह कार्य को पहले से निर्धारित तरीके से बेहतर तेज प्रभावित तरीके से कर सकता है । इसलिए एआई इंसानों की तरह सोचने, निर्णय लेने में और कार्य कर सके, इस दृष्टि से बोध स्तर पर मशीनों को विकसित किया जा रहा है जिससे प्रौद्योगिकी में सुधार के साथ-साथ हम विभिन्न क्षेत्रों की तकनीकी समस्याओं का हल आसानी से कर सकेंगे । इस प्रकार मानव स्वचालित कार्यों में तीव्रता आएगी और त्रुटियों की संभावना भी काम हो सकेगी । अत: मानव प्रयास को बेहतर बनाया जा सकता क्योंकि यह प्रत्येक कार्य को बिना मानवीय हस्तक्षेप के भी कर सकता है । यह मानवी जीवन को सरल, सहज,अधिक प्रभावी और सशक्त बना देता है।[5] इसलिए यहां प्रश्न उठता है कि क्या एआई सामुदायिक कल्याण में अपना योगदान दे सकता है? यदि हां तो कैसे?

सामुदायिक कल्याण में एआई का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उन्नतपूर्ण जीवन स्तर के साथ-साथ संसाधनों के कुशल प्रबंधन में स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक न्याय और समानता, पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में व्यापक सुधार लाने में सहायक भी हो सकता है । इस सम्बन्ध में कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार है-

स्वास्थ्य सेवा में सुधार -एआई के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल की जा सकती है बीमारी का यथा शीघ्र निदान, उनके उपचार की सर्वोत्तम योजनाएं बनाना जिससे स्वास्थ्य सेवाओं का अधिक कुशल प्रबंधन संभव हो सकेगा जैसे एआई आधारित टूल्स डॉक्टर को बीमारी के पैटर्न को पहचानने में मदद करते हैं जिससे यथाशीघ्र इलाज शुरू किया जा सकता है। स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई का कुशल प्रयोग कर हम महामारी की भविष्यवाणी, स्वास्थ्य का अवलोकन और वैक्सीनेशन अभियानों में व्यापक रूप से इसका प्रयोग कर सकते हैं । संभवत: टेलीमेडिसिन और रिमोट सेंसिंग के माध्यम से भी ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को पहुचाने में भी सहायता मिल सकती है।

शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना- एआई व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करने में सक्षम हो सकता है । जहां छात्रों के व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों को समझ कर उनकी क्षमता के अनुरूप कस्टमाइज्ड पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है । यह तकनीकी आधारित शिक्षा अधिक सुलभ व सस्ती शिक्षा प्रदान करने में मदद भी कर रहा है विशेषकर यह दुर्गम क्षेत्रों में जहां परंपरागत शिक्षा की पहुंच अब तक सुलभ नहीं हो पाई है।

सामाजिक न्याय और समानता -एआई का उपयोग सामाजिक न्याय ,सुरक्षा और अपराध नियंत्रण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है अभी हाल ही में पंजाब हाईकोर्ट ने ChatGPT के प्रयोग द्वारा न्याय प्रदान किया है यथा- न्यायपालिका में एआई द्वारा मामलों का त्वरित विश्लेषण किया जाना, अपराधी और हिंसा की पहचान

कर उसकी रोकथाम के लिए एआई आधारित निगरानी सिस्टम से उनकी गतिविधियों का पूर्वानुमान करना, जिससे अपराधियों की पहचान की जा सके और समाज में एक सुरक्षित वातावरण की स्थापना हो अत: एआई का उपयोग आवश्यकताओं के अनुरूप सहायता वितरण और सामाजिक प्रणालियों में निष्पक्षता लाने के लिए भी किया जा सकता है।

आपातकालीन सेवाओं में एआई की भूमिका-एआई का प्रयोग प्राकृतिक आपदाओं जैसे- बाढ़, भूकंप, तूफ़ान के समय त्वरित सहायता भेजने में किया जा सकता है। मौसम का पूर्वानुमान लगाकर सरकार सहित अन्य सामाजिक संगठन समय रहते ही राहत कार्रवाई कर सकते हैं। एआई द्वारा संचालित रोबोट और डोन आपदा प्रभावित क्षेत्रों में मदद करने, मलवा हटाने,लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचने में भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं ।[6]

पर्यावरण संरक्षण में एआई- पर्यावरण संकटों की पहचान, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का पूर्वानुमान लगाने और ऊर्जा खपत को प्रबंधित करने, साथ ही साथ यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी अपना योगदान देता है । एआई द्वारा पर्यावरण प्रभाव को कम करने के लिए ग्रीन तकनीकी,ऊर्जा उत्पादन, नवीनीकरण स्रोत का विकास, संसाधनों के प्रबंधन को और अधिक कुशल बनाया जा सकता है ।

क्या एआई सामुदायिक कल्याण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है? इसका उत्तर सकारात्मक ही है। केवल आवश्यकता है इसमें सही दिशा का उपयोग । इसके लिए सरकार और अन्य संस्थाओं द्वारा एक स्पष्ट नैतिकत जिम्मेदारी की भावना को विकसित करना होगा जिससे एआई की पहुंच समाज के प्रत्येक वर्ग तक संभव हो सके । तभी सबका उत्थान संभव हो सकेगा । इसके बारे में लोगों को शिक्षण और प्रशिक्षण देने की आज आवश्यकता है किन्तु एआई डाटाबेस प्रणाली है । इसलिए डेटा सुरक्षा और गोपनीयता की मांगों का पालन करना आवश्यक बनाया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति और उसके व्यक्तिगत अधिकारों का उल्लंघन न हो ।

सामुदायिक कल्याण और एआई के संदर्भ में जब हम दार्शनिक दृष्टिकोण की बात करते हैं तब दर्शनिक दृष्टि से एआई और सामुदायिक कल्याण के बीच का जो संबंध हैं वह एक गहरी विचारधारा और नैतिकता से जुड़ा हुआ संबंध है। जहां प्राकृतिक बुद्धिमत्ता (मानव मस्तिष्क की स्वाभाविक क्षमता) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (मशीनों और कंप्यूटर्स द्वारा निर्मित बुद्धिमत्ता)के बीच तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है इस संदर्भ में कुछ दार्शनिक दृष्टिकोण इस प्रकार हैं ।

प्रकृति बनाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता - एक दार्शनिक प्रश्न यह है कि एआई को मानव कल्याण के लिए प्रेरित करने का नैतिक अधिकार किसके पास है ? यदि एआई का निर्णय मानवी अधिकार, स्वतंत्रता और सामानता से संबंधित है तो क्या हम इसे एक मशीन पर छोड़ सकते हैं ? इस सन्दर्भ में एनुअल कांट का दृष्टिकोण यह है कि मनुष्य स्वतंत्र,नैतिक और आत्मनिर्भर हैं । प्राकृतिक बुद्धिमत्ता मनुष्य को आत्मनिर्भर, विवेकवान् और स्वतंत्र बनाता है ।[7] जहां वह अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग स्वतंत्र रूप से करता है, साथ ही वह अपने निर्णयों को नैतिक रूप से मार्गदर्शित भी करता है । अपने विवेक का प्रयोग कर वह पूर्व निर्धारित विचारों से मुक्त होकर अपनी आत्मनिर्भरता को बनाए रखता है । यही स्वतंत्रता और नैतिक निर्णय मनुष्य की प्राथमिक प्राकृतिक बुद्धिमता है। नैतिकता केवल मानव स्वतंत्रता और चेतना से जुड़ी होती है जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संबंध इससे नहीं है, क्योंकि यह एक ऐसी प्रणाली है जो निर्धारित नियमों और एल्गोरिदम पर कार्य करती है स्वतंत्रता और नैतिक चेतना पर नहीं । कांट कहते हैं कि मानव को अंतिम उद्देश्य के रूप में देखा जाना चाहिए न कि साधन के रूप में यदि एआई मानव, समाज कल्याण के लिए कार्य करता है तो क्या यह मानव गरिमा और स्वतंत्रता का उल्लंघन कर सकता है? इस दृष्टि से एआई केवल एक उपकरण है इसे इसी रूप में देखा जाना चाहिए, जो मनुष्य की प्राकृतिक बुद्धिमत्ता में सहायक बन सकता है क्योंकि इसके द्वारा लिए गये निर्णय को हम नैतिक निर्णय नहीं कह सकते ।

प्रकृति और प्रौद्योगिकी के बीच संतुलन :जान राल्स अपने न्याय सिद्धांत में समानता और विभाजन की बात करते हैं समानता में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और समान अधिकार प्राप्त होते हैं जबकि विभाजन में सामाजिक और आर्थिक समानता तभी स्वीकार है जब वह सबसे गरीब वंचित वर्ग के हित में हो । यानी असमानता समाज के सबसे कमजोर वर्ग की स्थिति को सुधारने में हो [8] इस प्रकार राल्स प्राकृतिक संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण और प्रौद्योगिकी(एआई) को सामाज में समान रूप से वितरित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं । एआई की पहुच सभी वर्गों तक समान रूप से होनी चाहिए ताकि सभी को इसका लाभ मिल सके । जब इस तकनीकी का प्रयोग व्यक्ति विशेष के एक समूह तक किया जाएगा तो सामाजिक असमानताएं होगी । विभाजन सिद्धांत के संदर्भ में जब हम एआई का प्रयोग आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए करते हैं तब वह इस संदर्भ में उचित है कि इससे गरीब और वंचित वर्ग का लाभ सुनिश्चित हो सकता है । इसलिए स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा सामाजिक कल्याण जैसी योजना का आयोजन करना और प्राकृतिक संसाधनों का न्यायपूर्ण और स्थिर उपयोग सुनिश्चित करना जिससे पर्यावरण और समाज दोनों का संतुलन बना रहे ।

आध्यात्मिकता और अस्तित्वगत चिंताएं: सार्त्र कहते हैं मनुष्य का अस्तित्व पहले है इसके बाद वह अपनी पहचान और उद्देश्य को आकार देता है [9] तब यहां यह प्रश्न उठता है कि क्या एआई के बढ़ते प्रयोग से मानवता की पहचान खतरे में पड़ सकती है? अगर हम एआई के माध्यम से सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं तो क्या इससे मानव संबंधों और सांस्कृतिक पहचान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है? आलोचकों का कहना है कि एआई की भूमिका को बढ़ाना एक आध्यात्मिक संकट उत्पन्न कर सकता है, जहां मानव अपने अस्तित्व और उद्देश्य में आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया को खो सकता है । एआई का उपयोग स्वतंत्रता और स्वयं की पहचान के अस्तित्वगत संकट को भी बढ़ावा दे सकता है क्योंकि इसमें एक समय पर मनुष्य को यह महसूस हो सकता है कि वह अपनी स्वतंत्रता को खो रहा है क्योंकि यह मशीन उसके निर्णय की क्षमता को प्रभावित करती है क्योंकि सार्त्र का अस्तित्ववाद यह कहता है कि मनुष्य को अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए स्वयं निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए जबकि एआई के निर्णय मानव स्वतंत्रता और स्वयं की पहचान के सवालों को ही खत्म कर रहा है । इस प्रकार एआई को मात्र एक सहायक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए । क्योंकि महात्मा गांधी मनुष्य और मशीन में मनुष्य को अधिक महत्व देते हैं । मशीन मनुष्य के कल्याण का एक साधन है, यह तब तक अच्छी है जब तक मनुष्य की सेवा करती है, जब मशीन मनुष्य का स्थान ले लेती है वह अनुपयोगी हो जाती हैं।[10]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) से सम्बन्धित कुछ नैतिक और व्यवहारिक चुनौतियां

स्वयत्तता और स्वतंत्रता का ह्रास: एआई के बढ़ते उपयोग से मानव स्वायत्तता पर ही प्रश्न खड़ा कर दिया है क्योंकि इसमें निर्णय लेने की जिम्मेदारी एआई पर स्थानांतरित होती जा रही है ।तब मानवीय स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय का महत्व कम हो जाता है ।

समाज में असमानता और भेदभाव को बढ़ावा-AI सिस्टम में उपयोग किए गए डेटा पक्षपाती या असमान हो सकते है, जिससे गरीब, कमजोर या उत्पीड़ित वर्गों के लिए AI फैसले भेदभावपूर्ण हो सकते हैं। जैसे: AI द्वारा नौकरी के लिए चयन करते समय यदि ऐतिहासिक डेटा में महिलाओं, अल्पसंख्यकों या गरीबों के खिलाफ पूर्वाग्रह हो, तो यह निर्णयों में भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है।

सामाजिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता-AI का अत्यधिक उपयोग और निगरानी के बढ़ते स्तर से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गोपनीयता में सेंध लग सकती है। AI का उपयोग बड़े पैमाने पर नागरिकों की निगरानी के लिए किया जाए, तो यह उनकी स्वतंत्रता और निजता का हरण कर सकता है, जिससे स्वतंत्र विचार और अभिव्यक्ति पर खतरा हो सकता है।

जिम्मेदारी और जवाबदेही- जब AI फैसले लेने लगता है, तो अगर किसी फैसले से हानि होती है, तो जिम्मेदारी किसकी होगी? क्या यह AI के डेवलपर्स, उपयोगकर्ताओं या AI सिस्टम का होगा? उदाहरण: अगर एक AI द्वारा लिया गया निर्णय स्वास्थ्य देखभाल या न्यायपालिका में गलत होता है, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा ? जिसे स्पष्ट करना आज अत्यंत ही आवश्यक है एआई के उपयोग से कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी हमारे सामने दिखाई दे रही है |

व्यावहारिक चुनौतियाँ -

*डिजिटल विभाजन-*AI के लाभ सभी तक समान रूप से नहीं पहुँच रहे हैं। तकनीकी और डिजिटल संसाधनों की कमी वाले समुदायों को इसके फायदे से वंचित किया जा सकता है, जिससे ग्रामीण इलाकों, विकासशील देशों या गरीब वर्गों में AI का उपयोग सीमित हो सकता है, जिससे सामाजिक असमानता और बढ़ सकती है।

स्वायत्तता और स्वतंत्रता - AI के बढ़ते प्रभाव से, विशेष रूप से चिकित्सा, न्याय और सार्वजनिक सेवाओं में, मानव निर्णय की स्वायत्तता खतरे में पड़ सकती है। ऐसे में यहां एक प्रश्न स्वाभाविक हो जाता है। क्या AI को स्वास्थ्य क्षेत्र में रोगियों के इलाज के निर्णय लेने की स्वायत्तता दी जानी चाहिए? यह मनुष्यों की गरिमा और स्वतंत्रता पर नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है।

बेरोजगारी और आर्थिक असमानता- सामाजिक व्यवसाय, अवसर और वेतनयुक्त कार्य के क्षेत्र में आज व्यापक रूप से एआई का प्रयोग किया जा रहा है जिसके कारण नौकरियों में स्वचालित प्रक्रियाओं का विलुप्तिकरण हो सकता है, विशेषकर निम्न कौशल वाले व्यवसाय में। यह समाज में बेरोजगारी और आर्थिक असमानता को बढ़ा सकता है। सामाजिक कल्याण के दृष्टिकोण से इस चुनौती को हल करना आवश्यक है, ताकि समावेशी और सशक्त समाज बन सके।

निष्कर्ष *:*

सामुदायिक कल्याण में एआई की भूमिका एक शक्तिशाली और संभावना से भरा हुआ क्षेत्र है लेकिन इसके साथ जुड़े नैतिक, सामाजिक और अस्तित्वगत प्रश्न हमें इसके प्रति सर्तक भी रखते हैं। एआई को सही दिशा में प्रयोग करने के लिए हमें इसे नैतिक परिप्रेक्ष्य आधिकारिक नियंत्रण और मानव गरिमा जैसे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए कुछ विशेष नीतियाँ बनानी होगी। दार्शनिक दृष्टि से एआई को मानवता और समाज कल्याण के लिए मार्गदर्शन देने वाली एक ताकत बनाना संभव है। शर्त यह है कि हमें इसे सही और न्यायसंगत तरीके से लागू करना होगा। मानव द्वारा निर्मित एआई दोषहीन नहीं है लेकिन समय-समय पर विकास के स्तर पर यह निपुणता की ओर यात्रा कर रहा है इसलिए एआई द्वारा किए गए कार्य कुछ अनुकूल परिणाम लाते हैं तो कुछ प्रतिकूल अत: इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि सामुदायिक कल्याण में कुछ जोखिम कार्य भी देखने को मिल सकते हैं।

संदर्भ:

1- Wang, P., & Goertzel, B. (2007). Introduction: Aspects of artificial general intelligence. In Proceedings of the 2007 conference on Advances in Artificial General Intelligence: Concepts, Architectures and Algorithms: Proceedings of the AGI Workshop 2006 (pp. 1-16).

2- वर्मा,प्रोफेसर अशोक कुमार, प्रारम्भिक समाज एवं राजनीति दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास ,दिल्ली, 2014 पृष्ठ स. 6

3- सिंह, डॉक्टर शिव भानु, समाज दर्शन का सर्वेक्षण, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2016, पृष्ठ स. 106

4- Li, G., Jin, Y., Akram, M. W., Chen, X., & Ji, J. (2018). Application of bio-inspired algorithms in maximum power point tracking for PV systems under partial shading conditions-A review. Renewable and Sustainable Energy Reviews, 81, 840-873.

5- Szeliski, R. (2014). Concise Computer Vision. An Introduction into Theory and Algorithms..

6- Morelli, J. (2011). Environmental sustainability: A definition for environmental professionals. Journal of Environmental Sustainability, 1(1), 2.

7- मिश्र, सभाजीत, कांट का दर्शन, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1998, पृष्ठ स.182-227

8- चौबे, कमलनयन, न्याय का सिद्धांत, जान राल्स, publisher - oxford University press (3 october 2022) pag 302

9- लाल, बसन्त कुमार, समकालीन पश्चात दर्शन,मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2007

पृष्ठ स.492 -514

10- वर्मा,प्रोफेसर अशोक कुमार, प्रारम्भिक समाज एवं राजनीति दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास ,दिल्ली, 2014 पृष्ठ स. 106